सेवकाई की मार्गदर्शिका पुस्तक

बच्चों के शिक्षकगणों को इस अध्ययनमाला से **A1b** पढ़ना चाहिये

प्रार्थना : ''हे प्रभु, प्रेरि. 1:8 में जिस पवित्रात्मा की सामर्थ को देने की आपने प्रतिज्ञा की है, वह सामर्थ हमें प्रदान कीजिए, ताकि हम यीशु के गवाह बन सकें।''

1. परमेश्वर के वचन से अपने हृदय और मस्तिष्क को तैयार करें।

लूका ने, जो एक सुसमाचार की पुस्तक का भी लेखक है, अपनी इस पुस्तक ''प्रेरितों के काम'' में बताता है कि किस प्रकार येरूशलेम में कलीसिया की स्थापना हुई और फिर यहूदियों व गैर-यहूदियों के मध्य रोमी, सामाज्य, एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप आदि में फैल गई।

प्रेरितों के काम अध्याय एक पढ़ें। प्रथम 8 पदों में ज्ञात करें कि परमेश्वर के राज्य को फैलाने का मूल-मन्त्र क्या है।

प्रेरितों के काम 1:8 में चार स्थान कौन-से दिए गए हैं जहां चेलों ने यीशु के नाम का पवित्रात्मा की सामर्थ में होकर प्रचार किया?

1) **येरूशलेम :**येरूशलेम उस समाज की प्रतीक है जहां हम रहते हैं। आपका ''येरूशलेम'' क्या है?
2) **यहूदिया :** यहूदिया हमारे समाज में पाई जाने वाली अन्य संस्कृतियों का प्रतीक है। आपका ''यहूदिया'' कहां है?
3) **सामरिया :**सामरिया का अर्थ है उसी संस्कृति के लोग जो हमारे पड़ौस में रहते हैं। आपके ''सामरी लोग'' कौन हैं?
4) **पृथ्वी की छोर :**इससे हमारा तात्पर्य उन लोगों से है जो तुच्छ समझे जाते हैं, दूर-दूर रहते हैं, और परमेश्वर चाहता है कि हम उनके पास सुसमाचार लेकर जाएं।

प्रेरितों के काम 1:14 पढ़ें व ज्ञात करें कि जिस पवित्रात्मा को देने की प्रतिज्ञा यीशु ने शिष्यों से की थी, उसकी प्रतीक्षा में बैठे हुए वे क्या कर रहे थे।

प्रेरितों के काम अध्याय 2 पढ़ें और ज्ञात करें कि जो शिष्य पवित्रात्मा उंडेले जाने का इन्तज़ार कर रहे थे, जब उन पर पवित्रात्मा उतरा तो क्या हुआ? क्या पवित्रात्मा ने उनमें केवल एक उत्तेजनात्मक अनुभव ही प्रदान किया या फिर उन्हें गवाह बना दिया?

- प्रेरि. 2:24-32 में ज्ञात करें कि यीशु की मृत्यु हो जाने पर भी पतरस के संदेश का मुख्य बल किस बात पर था।

- प्रेरि. 2:37-47 में ज्ञात करें कि यीशु की आज्ञा का पालन करने के तुरन्त बाद विश्वासियों ने कौन-सी सात बातें करना आरम्भ कीं।

प्रेरितों के काम ''पुस्तक के अन्य अध्यायों में निम्मलिखित बातें ज्ञात कीजिए :

अध्याय 3 : जब हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर से क्या आशा करते हैं कि वह हमारे लिए क्या करे?

अध्याय 4 : उस समय हम क्या कर सकते हैं जब बैरी हमें सताते हैं, धमकियां देते हैं?

अध्याय 5 : जो परमेश्वर से झूठ बोलते हैं, तो परमेश्वर क्या करता है?

अध्याय 6 : आवश्यकताग्रस्त लोगों की देखभाल के लिए कलीसिया ने क्या किया?

अध्याय 7 : स्तिफनुस ने किस प्रकार इस्राएल का इतिहास दोहराया, जिससे धार्मिक अगुवे नाराज़ हो गए, उन नाराज़ लोगों ने उसके साथ क्या किया?

अध्याय 8 : फिलिप्पुस ने किस प्रकार सामारिया में सेवा आरम्भ की और शिमोन ने क्यों प्रेरितों को धन दिया।

अध्याय 9 : किस प्रकार परमेश्वर ने मसीही धर्म के घोर शत्रु को पश्चाताप् करने योग्य बनाया।

अध्याय 10-11 : परमेश्वर ने किस प्रकार विश्वासी यहूदियों को कायल किया तो अन्यजाति लोग भी पवित्रतात्मा का दान पा सकते हैं।

अध्याय 12 : राजा हेरोदेस ने याकूब के साथ क्या किया तथा पतरस हेरोदेस के हाथों से कैसे बचा।

अध्याय 13-14 : किसने पौलुस को पृथ्वी को छोर तक भेजा, कौन उसके साथ गया तथा उन्होंने किस प्रकार विश्वासियों के लिये प्रबन्ध किया।

अध्याय 15 : परमेश्वर ने किस प्रकार यहूदी विश्वासियों की अगुवाई की कि वे अन्यजाति विश्वासियों को स्वीकार करें जो यहूदियों की प्राचीन परम्पराओं और नियमों को नहीं मानते थे।

अध्याय 16 : यूरोप के फिलिप्पी नगर में किस प्रकार प्रथम कलीसिया स्थापित हुई? और वहां बन्दीगृह के दारोगा से पौलुस ने क्या प्रतिज्ञा की?

अध्याय 17 : यहूदियों ने कैसे विभिन्न प्रकार से पौलुस का संदेश स्वीकार किया?

अध्याय 18 : कुरन्थि में किस प्रकार पौलुस ने अपनी जीविका का उपाय किया? और जिनके साथ पौलुस रहता व धन्धा करता था उन्होंने अपुल्लौस के साथ क्या किया?

अध्याय 19-20 : इफिसुस नगर की कुछ घटनाएं देखें, उपद्रव का कारण क्या था? पौलुस ने किस प्रकार के भेड़ियों से उन्हें सावधान रहने का परामर्श दिया?

अध्याय 21-28 : पौलुस को येरूशलेम के बन्दीगृह में क्यों डाला गया? कैसे उस पर मुकदमा चला और रोम ले जाते समय उस पर क्या घटना घटी?

2. प्रेरितों का अनुकरण करते हुए, अगले सप्ताह की योजना बनाएं ताकि आपका झुण्ड सेवा कर सके।

- मसीह की साक्षी देने के लिए योजना बनाएं, जो मसीह को नहीं जानते, सारे विश्वासी एक दल के रूप में वहां जाएं और बताएं।
- जिस प्रकार प्रेरित प्रार्थना व पवित्रात्मा की सामर्थ में सेवा करते थे, उसी प्रकार आपके सदस्य भी कर सकें, इसका प्रबन्ध करें।
- अपने यहूदिया, सामरिया और येरूशलेम में स्थाई सेवा आरम्भ करने की योजना बनाएं।

3. आगामी आराधना के लिए योजना बनाएं :

ऐसी गतिविधि का चुनाव करें जो स्थानीय रीति-रिवाज़ों तथा तत्कालिक आवश्यकता के अनुकूल हो।

साक्षी की तैयारी :आराधना के समय विश्वासियों को ख्रीस्त की साक्षी सामर्थ सहित देने के लिए प्रोत्साहित करें। प्रेरितों के काम 1:8 पढ़ते समय विश्वासियों का ध्यान निम्नलिखित दो बातों की ओर खींचे-

- पहली बात : हमें जीवित प्रभु की साक्षी देने की सामर्थ कहां के प्राप्त होती है?
- दूसरी बात : किन चार स्थानों पर प्रेरित पवित्रात्मा की सामर्थ पाकर साक्षी देने गए?
- पढ़ने के पश्चात् लोगों से इन दोनों प्रश्नों का उत्तर देने व आपस में विचार-विमर्श करने का अवसर दें।

जिन चार स्थानों पर प्रेरितों ने ख्रीस्त की साक्षी दी, उनका हमारे लिए क्या अर्थ है? लोगों से यह पूछें। *(भाग-1 में इसका उत्तर दिया गया है)* तब अपने क्षेत्र के 'यहूदिया' व 'सामरिया' के लोगों के लिए जो ख्रीस्त से अन्जान हैं, प्रार्थना कीजिए।

बच्चे नाटक प्रस्तुत करें, यदि कविता व प्रश्न तैयार किए हों तो वे भी प्रस्तुत किए जाएं।

प्रेरितों के काम 1:8 कंठस्थ कीजिए।

जो योजनाएं आपने अपने सहायकों के साथ मिलकर बनाई हैं, कि आप सप्ताह के दौरान यीशु का प्रचार करने जाएंगे, लोगों को विस्तारपूर्वक समझाएं। इस सेवा के लिए विशेष तैयारी करें। विश्वासी लोगों को विचार करने का अवसर दें कि वे कहां भेंट करना चाहते हैं।

नए विश्वासियों की सहायता के लिए तैयारी करें ताकि वे ख्रीस्त की मूल आज्ञाओं का पालन कर सकें। प्रेरितों के काम 2:37-47 पढ़ने से पूर्व विश्वासियों को समझाएं कि जब 3000 लोगों ने ख्रीस्त की आज्ञा का पालन किया तो उन्होंने क्या किया था। उन्हें बताएं कि आपके सहयोगी, बिना कोई शब्द बोले, नाटक के रूप में वे सातों बातें प्रस्तुत करेंगे जो पिन्तेकुस्त के बाद नये विश्वासियों ने की थीं। वे कौन-सी बातें हैं :-

1) **पश्चात्ताप् :** दो सहायकों को तैयार करें जो बिना शब्द बोले अभिनय द्वारा पश्चात्ताप् का चित्रण कर सकें।

- एक सहायक कमरे के एक कोने में खड़ा होकर दूसरे की ओर शैतान की भांति संकेत करते हुए अपनी ओर आने को कहे।
- दूसरा सहायक धीरे-धीरे चलता हुआ उसकी ओर जाए। वह इधर-उधर देखता जाए मानों वह डर रहा हो कि कोई उसे देख न ले। जब वह शैतान के निकट हो, तो वहीं थोड़ा पहले रूक जाए, अपना हाथ हृदय पर रख ले और धीरे-धीरे प्रार्थना के लिए घुटने टेक दे। फिर उल्टा घूम जाए और दूसरी ओर चला जाए।
- तब आप लोगों से पूछें कि वे कल्पना करें कि नाटक में क्या चित्रण किया गया है। पश्चात्ताप् का अर्थ होता है, परिवर्तित हृदय, पाप से दूर रहना, और पाप की ओर न जाकर दूसरे मार्ग की ओर जाना।

2) **बपतिस्मा :** एक सहायक दूसरे सहायक को बपतिस्मा देने की स्थिति में हो जाए (लोगों को कहें कि वे कल्पना करें)

3) **परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाना :** एक सहायक दूसरे सहायक के सामने बाइबल खोलकर रखें और दिखाएं, मानो उसे सिखा रहा हो। (सब लोग कल्पना करें कि वे क्या कर रहे हैं)

4) **संगति (एक दूसरे से प्रेम करना) :** एक सहायक दूसरे सहायक को गले लगाए, पुरुष-पुरुष को तथा महिलाएं महिलाओं को, या ऐसी कोई क्रिया करें जिससे एक दूसरे के लिए मसीही प्रेम दिखाई दे। (सब लोग देखकर कल्पना करें)

5) **रोटी तोड़ना (प्रभु भोज) :** एक सहायक ऐसा अभिनय करे मानों उसे रोटी दे रहा हो। उसको प्याला देने का अभिनय करे। दूसरा सहायक ऐसा दिखाए जैसे वह रोटी व दाखरस खा पी रहा हो। (सब लोग कल्पना करें)

6) **प्रार्थना :** दो सहायक प्रार्थना की स्थिति में हो जाएं, और चुपचाप कुछ क्षण इसी स्थिति में रहें कि जान पड़े प्रार्थना कर रहे हैं। (सब लोग कल्पना करें)

7) **दान देना :** एक सहायक ऐसे अभिनय करें मानों दूसरे को कुछ दे रहा हो। और दूसरा सहायक ऐसा अभिनय करे कि वह धन्यवादी हृदय से ग्रहण कर रहा हो, पर कुछ बोलना नहीं है।

इसके बाद समझाएं कि प्रेरितों ने क्या किया। एक या अधिक घटनाएं जो आपने प्रेरितों के काम की पुस्तक में पढ़ीं हैं लेकर उसके विषय कलीसिया में बताएं या उस घटना पर आधारित नाटक प्रस्तुत करें। यदि जवान बच्चे और छोटे बच्चे दोनों इस प्रस्तुति में सहायता करें तो उत्तम होगा। तब विश्वासियों से पूछें कि उन्होंने क्या सीखा। तब आप पूछें कि इसके परिणामस्वरूप वे क्या करने की योजना बना रहे हैं।

प्रभु भोज विधि, मानने के लिए पढ़ें प्रेरि. 20:7 तथा समझाएं कि उस युग में विश्वासी लोग सप्ताह के पहले दिन जो प्रभु यीशु के पुनरुत्थान का दिन है, एकत्रित हुआ करते थे, और प्रभु भोज मनाया करते थे।

दो या तीन लोगों के समूह बनाकर प्रार्थना करें और एक दूसरे को प्रोत्साहित करें। सेवा कार्य संबंधी योजनाओं को पक्का करें, उन्हें अन्तिम रूप दें।

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net